Volume : 4 | Issue : 9 | Sept 2015 • ISSN No 2277 - 8179

Research Paper

Journalism

KEYWORDS : सोशल मीडिया, स्मार्टफोन, सिटिजन जर्नलिज्म!

स्मार्टफोन और सिटिजन जर्नलिज्म
Smartphone And Citizen Journalism

Dr. Subodh Kumar | Associate Professor & Convener, Department of Journalism, VMOU, Kota

ABSTRACT

एंड्रॉयड के दौर में जब सोशल मीडिया, वॉट्स एप और ऑनलाइन शॉपिंग जैसी चीजों का ट्रेंड लोगों के सिर चढ़कर बोल रहा है, सेल्फी का जमाना है छोटे बड़े सभी स्मार्टफोन के जरिए खुद को वर्चुअल संसार में पेश कर रहे हैं। ऐसे में नागरिक पत्रकारिता के क्षेत्र में भी आम जनमानस की रूचि नजर आ रही है! सोशल मीडिया को तो अभिव्यक्ति के प्रस्तुतीकरण के मंच की संज्ञा तो पहले ही दी जा चुकी है, साथ ही अब स्मार्टफोन के एप्स के जरिए सिटिजन जर्नलिज्म का एक नया ट्रेंड डेवलप हो रहा है। आज बहुत से अखबार अपने संस्करणों में वॉट्स एप के जरिए लोगों से फोटो प्राप्त करके प्रकाशित कर रहे हैं! ऐसे में जन समस्याओं को शीघ्र तौर पर संप्रेषित किया जा रहा है। प्रस्तुत शोध पत्र में स्मार्टफोन के जरिए विकसित हो रहे सिटिजन जर्नलिज्म के ट्रेंड के बारे में मंथन किया गया है शोध में बात सामने आई है स्मार्ट फोन नागरिक पत्रकारिता को सकारात्मक दिशा प्रदान कर रहा है और सिटिजन जर्नलिज्म को बढ़ावा देने में एक अहम उपकरण की भूमिका का निर्वहन कर रहा है।

भूमिका

सूचना संचार क्रांति ने जीवन के हर एक क्षेत्र से खुद को जोड़ दिया है। वर्तमान में बिना दूरसंचार उपकरणों के जीवन की कल्पना करना मानों रोशनी में दिए दिखाने जैसी बात हो गई है। भारत में विगत दस वर्षों में मोबाइल क्रांति ने कुछ ऐसी भूमि तैयार की है कि आज देश का हर कोना मोबाइल नेटवर्क से जुड़ गया है। मोबाइल फोन की खोज मानव जाति के लिए सबसे बड़े वरदानों में से एक साबित हो रही है। आज मोबाइल फोन हमारे जीवन का एक अनिवार्य हिस्सा बन गए हैं। लेकिन एक समय था जब मोबाइल सिर्फ समृद्ध वर्ग के सदस्यों तक ही सीमित था हम सबको धन्यवाद देना चाहिए नई तकनीक का, जिसने मोबाइल फोन को इतना सस्ता कर दिया कि यह अब हर आम आदमी के पास मौजूद है। वर्तमान में मोबाइल के जरिए एसएमएस, ईमेल, इंटरनेट, पैकेट स्विचिंग, गेमिंग, ब्लूटूथ, इंफ्रा रेड, वीडियो रिकॉर्डर के साथ कैमरे और तस्वीरें लेने की सुविधा, वीडियो भेजने और प्राप्त करने के लिए एमएमएस, एमपीथ्री प्लेयर, रेडियो और जीपीएस जैसी तमाम सुविधाएं मिल प् रही हैं। मोबाईल अपनी इस तमाम खूबियों की वजह से बेहद लोकप्रिय बना गया है। वर्तमान में मोबाइल स्मार्टफोन में तब्दील होता जा रहा है और काफी हद तक डेस्कटॉप कम्प्यूटर या लेपटॉप की जगह ले रहा है। ई-बैंकिंग और ई-कॉमर्स की पहुंच में वृद्धि करने में स्मार्टफोन की अहम भूमिका रही है। आज रिजर्वेशन से लेकर एजुकेशन और मीडिया इंडस्ट्री इत्यादि में स्मार्टफोन का उपयोग खूब हो रहा है। शॉपिंग, बैंकिंग, टैक्सी, रेलवे, फूडबाजार सभी कामों के लिए एप्स बन गए हैं। एंड्रॉयड तकनीक ने जीवन के हर हिस्से में छाप बना दी है। इसी उथल पुथल में सिटिजन जर्नलिज्म भी स्मार्टफोन से अपना वर्चस्व कायम करने के मार्ग पर दौड़ लगा रहा है।

मोबाइल फोन की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

दुनिया के पहले मोबाइल फोन का प्रदर्शन मोटरोला के डॉ मार्टिन कूपर ने सन १९७३ में किया था। मोटोरोला के इस सेलफोन की लम्बाई १० इंच की और वजन लगभग एक किलो था। ३ अप्रैल १९७३ को मोटोरोला कंपनी के रिसर्चर मार्टिन कूपर ने अपने प्रतिद्वन्द्वी बेल लैब्स के डॉ. जोएल एस एंगेल को पहली बार मोबाइल से कॉल की थी। एंगेल समझ गए कि वह पहला मोबाइल फोन पेश करने की रेस हार गए हैं। मोटोरोला के पहले हैंडसेट का नाम था 'डायना टीएसी'। इसकी बैट्री को एक बार रिचार्ज कर क़रीब ३५ मिनट तक बातचीत की जा सकती थी। करीब १० साल बाद १९८३ में मोटोरोला ने पहला मोबाइल हैंडसेट बाजार में उतारा था। डायना टीएसी को बाज़ार में उतारने से पहले उसका वजन करीब ७१४ ग्राम तक कम किया गया। इसके बाद भी यह इतना भारी था कि इसकी चोट से किसी की जान जा सकती थी। इसकी कीमत थी करीब दो लाख रुपये के आस-पास थी। सबसे पहली इसकी बिक्री अमेरिका में शुरू हुई। १९९० आते-आते अमेरिका में करोड़ों मोबाइल फोन यूजर्स हो गए थे।

मोबाइल फोन में वॉइस मेल की सुविधा १९८६ में जोड़ी गई। इसके १० साल बाद मोबाइल से इंटरनेट चलाने की सुविधा मिली। आजकल स्मार्टफोन का चलन तेजी से बढ़ रहा है। ज्यादातर लोग इसका मतलब आईफोन से समझते हैं। लेकिन स्मार्टफोन आईफोन के आने से सालों पहले आ चुका था। १९९३ में आईबीएम सिमोन बाजार में उतारा गया था। इसमें कैलेंडर, फैक्स, टच स्क्रीन और कई स्मार्ट फीचर्स थे। इसकी कीमत थी लगभग ४१,१९४ रुपए थी। मोबाइल फोन से मैसेज भेजने की शुरुआत करीब दो दशक पहले हुई थी। २२ साल के सॉफ्टवेयर प्रोग्रामर नाइल पैपवर्थ ने अपने दोस्त क्रिसमस शुभकामना के रूप में दुनिया का पहला टेक्स्ट मैसेज भेजा था। लेकिन तब मोबाइल फोन में कीबोर्ड नहीं होता था। इसलिए मैसेज को कंप्यूटर से भेजा गया। मोबाइल फोन के जरिए पहला फोटो १९९७ में शेयर किया गया था। फिलिप काह्न ने अपनी बेटी सोफी के पैदा होते ही उसकी फोटो भेज दी थी। फ्रांस के काह्न को पहला कैमरा फोन बनाने का श्रेय दिया जाता है। वर्तमान में रोज नए-नए तरीक के मोबाइल फ़ोन बाजार में आ रहे हैं स्मार्टफोन ने पूरा कंप्यूटर खुद में समाहित कर लिया है।

स्मार्टफोन

आम आदमी स्मार्टफोन का अर्थ अधिक फीचर वाला फोन समझता है, जबकि वास्तविकता यह इससे भिन्न है। स्मार्टफोन किसी हाई-एण्ड मोबाइल फोन को कहा जाता है। यह एक ऐसा बड़ी कलर स्क्रीन वाला मोबाइल फोन होता है, जिसमें कंप्यूटर जैसी उच्च स्तरीय क्षमताएं एवं उन्नत फीचर होते हैं तथा एक सुपरिभाषित (वैल डिफाइंड) ऑपरेटिंग सिस्टम होता है। स्मार्टफोन हार्डवेयर एवं सॉफ्टवेयर दोनों ही स्तर पर बेसिक फोन से उन्नत होता है। हार्डवेयर की दृष्टि से इसमें मेमोरी कार्ड, कैमरा, ब्ल्यूटूथ जैसे सामान्य फीचर तो होते ही हैं, साथ में तेज प्रोसेसर, अधिक रैम, हाई रिजॉल्यूशन डिस्पले, जीपीएस नेवीगेशन तथा मोशन सेंसर जैसे आधुनिक फीचर भी होते हैं। सॉफ्टवेयर के मामले में जहां इसमें कंप्यूटर की तरह एक ऑपरेटिंग सिस्टम होता है, वहीं इसके फंक्शन्स को ऍप्लिकेशन्स (एप्स) की सहायता से बढ़ाया जा सकता है। आजकल अधिकतर स्मार्टफोन टचस्क्रीन युक्त होते हैं। टचस्क्रीन फोन वेबसर्फिंग के लिये बेहतर होती है तथा बड़ी स्क्रीन के कारण वीडियो प्लेबैक भी बेहतर होता है। वर्तमान में स्मार्टफोन थ्री जी और अब फोर जी सुविधा युक्त होते जा रहे हैं, जिसके द्वारा उनमें तेज गति इण्टरनेट तथा वीडियो कॉल/चैट आदि का आनन्द प्राप्त किया जा रहा है।

सिटिजन जर्नलिज्म

सिटिजन जर्नलिज्म या हिंदी में कहें तो नागरिक पत्रकारिता। यह पत्रकारिता का एक ऐसा उपकरण है जो न्यू मीडिया के विकास के बाद तेजी से हरकत में आया। इसमें आम व्यक्ति सोशल मीडिया और स्मार्टफोन के माध्यम से मुद्दे विशेष पर अपने मत को व्यक्त करता है साथ ही साथ वह घटना विशेष के सन्दर्भ में अपने सोशल मीडिया अकाउंट या ब्लॉग के द्वारा लोगों को तक समाचार भी पहुंचता है। वर्तमान परिदृश्य में तकनीकी नवाचारों ने नागरिक पत्रकारिता के क्षेत्र को विकसित किया है। आज ब्लॉग्स और विकीपीडिया जैसे सूचना तंत्र को विकसित करने में नागरिक पत्रकारिता का अहम योगदान रहा है। सोशल मीडिया में जैसमिन रेवोलुशन और अन्ना हजारे के आंदोलनों की प्रतिक्रिया नागरिक पत्रकारिता के नायाब उदाहरणों में शामिल हैं। आज आम व्यक्ति के द्वारा सोशल मीडिया के जरिए किया जा सारा सूचना संप्रेषण सिटिजन जर्नलिज्म (नागरिक पत्रकारिता) का हिस्सा है।

स्मार्टफोन और सिटिजन जर्नलिज्म

बदलते दौर में सोशल मीडिया पर लोगों की बढ़ती भीड़ ने सोशल मीडिया के क्षेत्र में नई संभावनाओं को जन्म दिया है। वर्तमान में लोग इसे आंदोलनों का मंच मानने लगे हैं। बदलते परिदृश्य में सूचना तकनीक आम हाथों का हिस्सा हो गई है। आज बाजार में प्रतिस्पर्धा के चलते स्मार्टफोन जैसे उपकरण बहुत सस्ते दामों में उपलब्ध हो गए हैं इससे इनकी पहुंच आम जन मानस में हो गई है। सेल्फी लेना और स्टेटस अपडेट करना आम बात हो चली है। लोग कहीं कोई चीज गलत देखते ही अपने स्मार्टफोन से फोटो खींच कर वाट्स एप और फेसबुक जैसे तमाम वेबसाइट्स या एप्स पर अपलोड कर देते हैं और लोगों की तेज प्रतिक्रिया के चलते कोई भी घटना बहुत जल्दी बड़े जनसमूह में फैल जाती है। कई बार तो कुछ घटनाओं पर सरकार या कोर्ट संज्ञान भी ले लेता है। इस तरह के परिणामों को देखते हुए समाचार पत्रों ने अपने संस्करणों वाट्स एप सामग्री के लिए कॉलम शुरू किया है जिसमें लोगों को किसी भी घटना या समस्या से संबंधित फोटो भेजने का आग्रह किया जाता है और लोगों के द्वारा भेजी गई तस्वीरे उनके परिचय के साथ प्रकाशित की जा रही हैं। टीवी चैनल पर आम व्यक्तियों के द्वारा भेजे गए वीडियो पर न्यूज़ कैप्सूल का चलन देखने को मिल रहा है। ये सभी घटनाएं स्मार्टफोन के जरिए हकीकती स्वरूप पा रही हैं। अन्ना हजारे के जन आंदोलन में बात सामने आई थी कि लगभग सत्तर फीसदी लोग मोबाइल और स्मार्टफोन के जरिए आंदोलन से शामिल हुए थे। इस दौरान आंदोलन को बल देने के लिए सोशल मीडिया पर लोगों द्वारा भ्रष्टाचार के खिलाफ लिखे गए लेखों ने अहम भूमिका निभाई और देश के सभी हिस्सों से युवा इस आंदोलन का हिस्सा बन गए। हाल ही में कुछ घटनाएं लोगों के व्यक्तिगत प्रयास से मीडिया में सुर्खियां बटोर गई जैसे यूपी के किसी मंत्री द्वारा एक व्यक्ति को धमकाए जाने पर उसके द्वारा काल रिकॉर्ड कर मीडिया हाउसेस को भेजना हो या फिर दिल्ली के एक ट्रैफिक कांस्टेबल द्वारा एक महिला को पत्थर से मरना हो ऐसे तमाम उदाहरण हैं जो सिटिजन जर्नलिज्म में स्मार्टफोन के प्रयोग की कहानी बयां करते हैं। स्मार्टफोन के द्वारा लोग आसानी से सूचनाओं का सम्प्रेषण कर पा रहे हैं यही कारण है कि नागरिक पत्रकारिता नए आयाम स्थापित कर रहा है।

निष्कर्ष

समाज के अंग के रूप में तकनीक ने अपना स्थान बना लिया है। सॉफ्टवेयर्स और हार्डवेयर्स दोनों ही क्षेत्रों में नवाचारों ने तकनीक की पहुंच को आम व्यक्ति तक कर दिया है। एंड्रॉयड ने एप्स की दुनिया को जन्म दे तकनीक को यूजर्फ्रेंडली बना दिया है जिससे आम यूजर आसानी से बहुत सी एप्लीकेशनों को बेझिझक प्रयोग कर पा रहा है। ऐसी ही तकनीक स्मार्टफोन भी हैं जो अभिव्यक्ति का मुख्य उपकरण बन गए हैं। आज मीडिया में किसी भी घटना पर आम व्यक्तियों द्वारा भेजी गई सामग्री के प्रकाशन और प्रसारण का चलन तेजी से बढ़ रहा है जिसे सिटिजन जर्नलिज्म के नाम से संबोधित किया जा रहा है। प्रत्यक्षदर्शियों के द्वारा स्मार्टफोन से घटना की तस्वीरें और वीडियो बनाकर सोशल मीडिया पर अपलोड करना और मीडिया हाउसेस को भेजना आम बात हो गई है। वर्तमान में अधिकतर प्रत्यक्षदर्शी ही मीडिया कवरेज के लिए सामग्री प्राप्त करने का अहम सोर्स बनते जा रहे हैं। वाट्स एप और फेसबुक जैसे तमाम साधन सिटिजन जर्नलिज्म का मुख्य आधार बन रहे हैं खास कर वाट्स एप करना एक ट्रेंड बनता जा रहा है। वर्तमान में मीडिया हाउसेस लोगों को घटना की तस्वीरें और वीडियो भेजने के लिए अपना वाट्स एप नंबर मुहैया करवा रहे हैं। समाचार पत्रों ने इसके लिए अलग से कॉलम तक शुरू कर दिया है। इस तरह के प्रयोग यदि संभव हो पाए हैं और सिटिजन जर्नलिज्म को विकसित करने के लिए मंच मिल पाया है तो इसमें स्मार्टफोन की अहम भागीदारी से इंकार नहीं किया जा सकता है।

Volume : 4 | Issue : 9 | Sept 2015 • ISSN No 2277 - 8179

REFERENCE

पुस्तकें ˝ १. शर्मा, विजय (२०११). आधुनिक पत्रकारिता प्रभाव एवं कार्य. जयपुर: इशिका पब्लिशिंग हाउस। | २. चतुर्वेदी, जगदीश्वर (२०१३). मीडिया समग्र (भाग-३) ज्ञान-क्रान्ति और साइबर संस्कृति. दिल्ली: स्वराज प्रकाशन। | ३. जोशी, शालनी, जोशी, शिवप्रशाद (२०१२). वेब पत्रकारिता नया मीडिया नये रुझान. नई दिल्ली: राधाकृष्ण प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड। | ४. सिंह, सुरजीत (२०१२). मीडिया अचीवर्स. जयपुर: हार्सबैक पब्लिकेशन। | ७. कुमार, राकेश (२००१). इलेक्ट्रानिक मीडिया एवं साइबर संचार पत्रकारिता. नई दिल्ली: श्री नटराज प्रकाशन। | ६. डॉ. सोनी, सुधीर (२००६). नवीन मीडिया प्रविधियां . जयपुर: बुक एनक्लेव। | ७. कुमार, सुरेश (२००४). इंटरनेट पत्रकारिता. नई दिल्ली: तक्षशिला प्रकाशन। | 8. Saxena, mbrish (2012). Issue of communication development and society. Gera, Gagan (Eds.) Social Media Networking and concept of International Citizenship (P.P.163-167). New Delhi : Kanishka Publisher, Distributors. | 9. Mathur, K, Prasant (2012). Social Media and Networking Concept, trend and dimensions. New Delhi : Kanishka Publisher, Distributors. | 10. Gupta, Om Jasra jay S. (2002). Information Technology in Journalism. New Delhi : Kanishka Publishers, Distributors. | emoY nÌ | 1. Gupta, Komal.(Oct-Dec., 2013). ICT Vision 2020: Milestone. Communication Today, 44-53 | 2. Mathur, nubhav.(Oct-Dec., 2013). Mobile Comes to India. Communication Today. | 3. Dr. Nayak, S. Chandra.(Oct-Dec., 2013). Social Media: Connecting One and ll. Communication Today, 66-74 | 4. Pankaj Dr., charya, kunjan.(Oct-Dec., 2013). Social Networking: Youth in New Millennium. Communication Today, 75-86. | do~gmBQ²g | 1. www.knowyourmobile.com/.../history-mobile-phones-1973-2008-hands. (12/08/15 . 5:10 PM²) | 2. www.knowyourmobile.com/.../history-mobile-phones-1973-2008-hands. (12/08/15 . 5:30 PM²) | 3. www.knowyourmobile.com/.../history-mobile-phones-1973-2008-hands. (12/08/15 . 8:15 PM²) | 4. https://en.wikipedia.org/wiki/Citizenšjournalism. (12/08/15 . 5:10 PM²) | 5. searchmobilecomputing.techtarget.com/definition/Smartphone. (12/08/15 . 9:52 PM²) | |